



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)  
PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 308]

नई दिल्ली, सोमवार, जुलाई 25, 1994/श्रावण 3, 1916

No. 308]

NEW DELHI, MONDAY, JULY 25, 1994/SRAVANA 3, 1916

कंपनी विधि बोर्ड

अधिसूचना

नई दिल्ली, 25 जुलाई, 1994

सा.का.वि. 593 (घ) :—कंपनी विधि बोर्ड, कंपनी अधिनियम, 1956 (1956 का 1) की धारा 10-ड की उपधारा (6) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, कंपनी विधि बोर्ड विनियम, 1991 का संशोधन करता है, अर्थात् :—

1 (1) इन विनियमों का संक्षिप्त नाम कंपनी विधि बोर्ड (संशोधन) विनियम, 1994 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होंगे।

परिभाषा

2 कंपनी विधि बोर्ड विनियम 1991 (जिसे इसमें इसके पश्चात् मूल विनियम कहा गया है) के विनियम 2 में—

(क) खंड (ड) के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा :—

“(ड) “न्यायपीठ” से बोर्ड की न्यायपीठ अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत मुख्य न्यायपीठ और एकल रूप से आमोन कोई सदस्य है”;

(ख) खंड (ड) के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :—

“(ड) “सदस्य” से बोर्ड का कोई सदस्य (चाहे न्यायिक हो या तकनीकी) अभिप्रेत है और इसके अन्तर्गत अध्यक्ष और उपाध्यक्ष भी हैं”;

(ग) खंड (न) के पश्चात् निम्नलिखित खंड जोड़ा जाएगा, अर्थात् :—

“(न) “उपाध्यक्ष” से बोर्ड का उपाध्यक्ष अभिप्रेत है।”;

3. मूल विनियम के विनियम 4 के स्थान पर निम्नलिखित रखा जाएगा, अर्थात् :—

किंवा न्यायपीठ द्वारा नियुक्त जाने वाले मामलों को विनिश्चित करने की अध्यक्ष की शक्ति।

4. (1) अध्यक्ष के लिए इन बात का उल्लेख करना विधिपूर्ण होगा कि धारा 235, 237, 247, 248, 250, 388-ख, 408 और 409 के अन्तर्गत आने वाले मामलों और अधिनियम के भाग 6 के अध्याय 6 के अन्तर्गत और एकाधिकार अधिनियम की धारा 2-क के अन्तर्गत आने वाले मामलों और उनके प्रावधानों तथा अन्य मामले अध्यक्ष या उपाध्यक्ष सहित दो से अधिक सदस्यों में बाँटकर बतने वाली किंवा न्यायपीठ द्वारा (जिसे मुख्य न्यायपीठ के रूप में जाना जाएगा) निरधार्य जाएंगे।

(2) मुख्य न्यायपीठ नई दिल्ली में होंगे, किन्तु मुख्य न्यायपीठ भारत में ऐसे स्थानों पर और ऐसे समय पर बैठक कर सकती है जो भारत में इसकी शक्तियों के प्रयोग और कृत्यों के सम्पादन में सर्वाधिक सुविधाजनक हो।

- (3) अध्यक्ष के लिए यह उपबंध करना विधिपूर्ण होगा कि अधिनियम की धारा 111 और धारा 269 तथा प्रतिभूति अधिनियम की धारा 22-क के अन्तर्गत आने वाले मामले दो से अधिक सदस्यों से मिलकर बनने वाली किसी न्यायपीठ द्वारा निपटाए जाएंगे और इस विनियम के उपविनियम (1) और उपविनियम (3) के अन्तर्गत न आने वाले सभी अन्य मामले जिनके अन्तर्गत निर्देशों का जारी करना और अंतिम मामले भी हैं, एकल सदस्य से मिलकर बनने वाली न्यायपीठ द्वारा निपटाए जाएंगे;

परन्तु विनियम 7 में किसी बात के होते हुए भी अध्यक्ष के लिए किसी प्रादेशिक न्यायपीठ के समक्ष लम्बित किसी मामले को लेख्यद्वय किए जाने वाले कारणों से मुख्य न्यायपीठ को अन्तर्गत करना विधिपूर्ण होगा। विनियम 5 का लोप किया जाना।

- (4) मूल विनियम के विनियम 5 का लोप किया जाएगा।  
विनियम 6 का लोप किया जाना।

- (5) मूल विनियम के विनियम 6 का लोप किया जाएगा।

[फा.स. 1 (10)/88-सी.एल.-5/सी.एल.बो]  
कंपनी विधि बोर्ड के आदेशानुसार  
ए. आर. रामानाथन, सदस्य

टिप्पणी : ---प्रधान विनियम

- (1) सा.का.नि. संख्या 291 (अ) दिनांक 31-5-91 तत्पश्चात् संशोधन द्वारा  
(2) सा.का.नि. 492 (अ) दिनांक 14-5-92

## COMPANY LAW BOARD NOTIFICATION

New Delhi, the 25th July, 1994

G.S.R. 593(E).—In exercise of the powers conferred by Sub-section (6) of section 10E of the Companies Act, 1956 (1 of 1956), the Company Law Board hereby amends the Company Law Board Regulations, 1991, namely:—

1. (1) These regulations may be called the Company Law Board (Amendment) Regulations, 1994.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

Definition

2. In Regulation 2 of the Company Law Board Regulations 1991 (hereinafter referred to as the Principal Regulation)—

- (a) for clause (e) the following shall be substituted :—

“(e) ‘Bench’ means a bench of the Board and includes the Principal Bench and a member sitting singly”;

- (b) for clause (m) the following shall be substituted, namely :—

“(m) ‘Member’ means a Member (whether judicial or technical) of the

Board and includes the Chairman and Vice Chairman”;

- (c) after clause (x) the following clause shall be added, namely :—

“(y) ‘Vice Chairman’ means Vice Chairman of the Board.”;

3. In the Principal Regulation, for Regulation 4 the following shall be substituted, namely :—

Power of the Chairman to specify matters which may be dealt with by a Bench.

“4. (1) It shall be lawful for the Chairman to provide that matters falling under sections 235, 237, 247, 248, 250, 388B, 408 and 409 and matters falling under Chapter VI of Part VI of the Act and under Section 2A of the Monopolies Act and all other matters incidental thereto shall be dealt with by a Bench consisting of not less than two members including the Chairman or the Vice Chairman (which shall be known as the Principal Bench).

(2) The Principal Bench shall be at New Delhi but the Principal Bench may sit at such places in India and at such time as may be most convenient in exercise of its powers and functions in India.

(3) It shall be lawful for the Chairman to provide that matters falling under sections 111 and 269 of the Act and under section 22A of the Securities Act shall be dealt with by a Bench consisting of not less than two members and all other matters not falling under sub-regulations (1) and (3) of this regulation including issuing of directions and interlocutory matters may be dealt with by a Bench consisting of a single member;

Provided that notwithstanding anything contained in Regulation 7, it shall be lawful for the Chairman to transfer any matters pending before any Regional Bench to the Principal Bench, for reasons to be recorded in writing.”

Omission of Regulation 5

(4) Regulation 5 of the Principal Regulation shall be omitted.

Omission of Regulation 6

(5) Regulation 6 of the Principal Regulation shall be omitted.

[F. No. 1(10)88-CL V/CLB]

By Order of the Company Law Board.  
A. R. RAMANATHAN, Member

Foot Note : Principal Regulation

(1) G.S.R. No. 291(E) dated 31-5-91 subsequently amended by—

(2) G.S.R. No. 492(E) dated 14-5-92.